काली चालीसा

श्री काली पूजन यंत्र, पूजन विधि,
काली अष्टक, माता महाकाली पूजन आरम्भ खण्ड,
पुष्पांजलि प्रार्थना, महाकाली ध्यान मंत्र व आरती सहित।



॥ ॐ क्रीं कालिकायै नमः ॥

काली चालीसा

सरल हिन्दी अनुवाद, श्री काली पूजन यंत्र, पूजन विधि, संकटमोचन काली अष्टक, माता महाकाली पूजन आरम्भ खण्ड, पुष्पांजलि प्रार्थना महाकाली ध्यान मंत्र व आरती सहित।



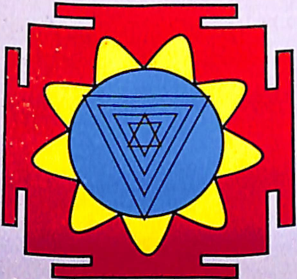
महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौंक अड्डा टांडा, जालन्धर

फोन न० : 0181-2212696

12/-

श्री काली पूजन यंत्र



पहले बिन्दु ॐ, उसके बाद निज बिन्दु क्रीं, फिर भुवनेश्वरी बीज 'ह्रीं' लिखकर उसके बाहर एक त्रिकोण अंकित करें। तत्पश्चात् उस त्रिकोण के बाहर क्रमशः चार अन्य त्रिकोण बनाकर एक वृत्त, फिर अष्टदल पद्म तथा पनुर्वार वृत्त अंकित करें। उसके बाहर यहां दिए गए चित्र की भांति चतुर्द्वार अंकित करके यंत्र को पूर्ण रूप दें। यंत्र दर्शन से भी पुण्य प्राप्त होता है।

पूजन विधि

प्रातः काल नित्य कर्मो से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करने के बाद मां काली का चित्र तथा पूजन यंत्र (ताम्रपत्र पर खुदा या भोजपत्र पर हल्दी से बना) सामने रखें। फिर शुद्ध घी का दीपक, अगरबत्ती, चावल, पुष्प, सिंदूर व नारियल चढ़ाकर निम्न मंत्र का जाप करें:-

ॐ ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।

इसके पश्चात काली जी का ध्यान करते हुए काली चालीसा का पाठ करें। महाकाली निश्चित ही आपकी मनोकामना पूर्ण कर आपको सफलता प्रदान करेंगी।

ध्यान

शावारूढ़ां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भूजां खड्गमुण्डवराभयकरां शिवम्।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं सञ्चिन्तयेत्कालीं श्मशानालय वासिनीम।।

श्री काली चालीसा

जयकाली कलिमलहरण, महिमा अगम अपार।
महिष मर्दिनी कालिका, देहू अभय अपार॥



हे माता! आप संसार के पाप और विकार हरने वाली हैं। आपकी महिमा अपरम्पार है। आपने महिषासुर का वध करके संसार को अपार निर्भयता का वरदान प्रदान किया।

अरि मद मान मिटावन हारी।
मुण्डमाल गल सोहत प्यारी॥



हे काली माता! आप शत्रुओं का अहंकार नष्ट करने वाली हैं। आपके गले में मुण्डमाला शोभायमान है।

अष्टभुजी सुखदायक माता।
दुष्टदलन जग में विख्याता ॥



आप आठ भुजाओं से युक्त और सुख प्रदान करने वाली हैं। दुष्टों के संहारक के रूप में आप जगत विख्यात हैं।

भाल विशाल मुकुट छवि छाजै।
कर में शीश शत्रु का साजै॥



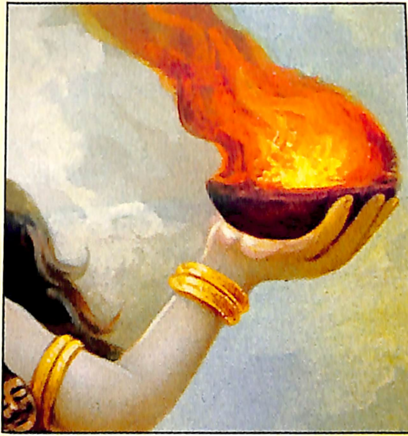
आपके विशाल मस्तक के मुकुट की शोभा अवर्णनीय है। आपके हाथ में शत्रु का कटा शीश शोभा पा रहा है।

दूजे हाथ लिए मधु प्याला।
हाथ तीसरे सोहत भाला॥



आपने अपने दूसरे हाथ में मधु (मदिरा) का प्याला लिया हुआ है तथा तीसरे हाथ में भाला शोभायमान है।

चौथे खप्पर खड्ग कर पांचे।
छठे त्रिशूल शत्रु बल जांचे।।



चौथे में खप्पर व पांचवें में खड्ग धारण किए आप छठे हाथ के त्रिशूल से शत्रुओं का बल जांचा करती हैं।

सप्तम करदमकत असि प्यारी।
शोभा अद्भुत मात तुम्हारी।।



हे मां! आपके सातवें हाथ में कृपाण है, जिसकी शोभा से आपका तेज अद्भुत दृष्टिगोचर होता है।

अष्टम कर भक्तन वर दाता।
जग मनहरण रूप ये माता॥



आठवें हाथ से आप भक्तों को वरदान प्रदान करती हैं। आपका यह रूप जगत के लिए अत्यन्त मनोहारी है।

भक्तन में अनुरक्त भवानी।
निशदिन रटें ऋषी–मुनि ज्ञानी ॥



हे माता! भक्तों से आप बहुत स्नेह रखती हैं। ऋषि, मुनि और विद्वान सभी आपकी स्तुति में रत रहते हैं।

महाशक्ति अति प्रबल पुनीता।
तू ही काली तू ही सीता॥



काली एवं सीता (कुष्ण और राम की शक्ति) के रूप में आप महा-शक्तिशाली, प्रचण्ड और पवित्र हैं।

पतित तारिणी हे जग पालक।
कल्याणी पापी कुल घालक ॥



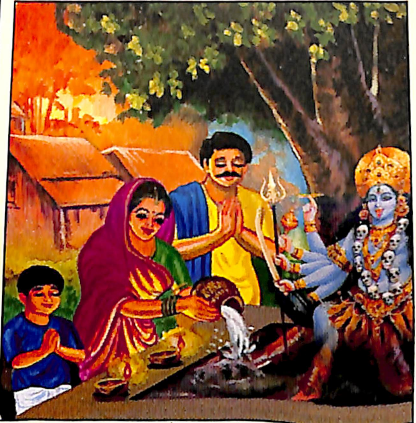
हे जगपालिके! आप पतितों का उद्धार करने वाली और शरण में आए पापियों के कुल का कल्याण करने वाली हैं।

शेष सुरेश न पावत पारा।
गौरी रूप धर्यो इक बारा॥



आपने एक बार पार्वती का अद्भुत रूप धारण किया जिसका वर्णन शेषनाग, इन्द्रानि भी नहीं कर पाए।

तुम समान दाता नहिं दूजा।
विधिवत् करें भक्तजन पूजा॥



आपके समान वर प्रदान करने वाला कोई नहीं। भक्तों की विधिवत् स्तुति से आप शीघ्र प्रसन्न होती हैं।

रूप भयंकर जब तुम धारा।
दुष्टदलन कीन्हेहु संहारा॥



जब-जब आपने प्रचण्ड रूप धारण किया है, तब-तब आपने पापियों का सेना सहित संहार किया है।

नाम अनेकन मात तुम्हारे।
भक्तजनों के संकट टारे॥



हे माता! आप अनेक नामों से जानी जाती हैं, आपके वे सभी नाम भक्तजन के संकट दूर कर देते हैं।

कलि के कष्ट कलेशन हरनी।
भव भय मोचन मंगल करनी॥



आप कलियुग के समस्त कष्ट और संतापों को दूर कर भय हरने तथा मंगल करने वाली दयामयी माता हैं।

महिमा अगम वेद यश गावैं।
नारद शारद पार न पावैं॥



आपकी महिमा और यश वेदों ने भी गाया है। नारद-शारद, ज्ञानी-ध्यानी भी आपका पार नहीं पा सके हैं।

भू पर भार बढ्यौ जब भारी।
तब तब तुम प्रकटीं महतारी ॥



जब-जब धरती पर पापों का बोझ बढ़ा, तब-तब आपने प्रकट होकर मानवता का उद्धार किया।

आदि अनादि अभय वरदाता।
विश्वविदित भव संकट त्राता ।।



हे माता! आप संकट हरने वाली मां के रूप में जगविख्यात हैं। आपने ब्रह्माण्ड को अभय वर दिया है।

कुसमय नाम तुम्हारौ लीन्हा।
उसको सदा अभय वर दीन्हा।।



विपत्ति काल में जिसने भी आपका स्मरण किया, आपने सदैव सहायता कर, उसे अभय का वर दिया।

ध्यान धरें श्रुति शेष सुरेशा।
काल रूप लखि तुमरो भेषा।।



आपके अति भयंकर काल रूप का ध्यान धरते हुए सरस्वती, शेषनाग और इंद्रादि भी आराधनारत हो उठते हैं।

कलुआ भैंरों संग तुम्हारे।
अरि हित रूप भयानक धारे।।



दुष्टों तथा शत्रुओं के नाश के लिए भयानक रूप धारण करने वाले काल भैरव सदैव आपके साथ रहते हैं।

सेवक [illegible] अगारी ।
चौंसठ जोगन आज्ञाकारी ।।



हे माता! चौंसठ जोगन सेविकाएं आपकी आज्ञाकारिणीं हैं और लांगुर सेवक आपकी सेवा को तत्पर हैं।

त्रेता में रघुवर हित आई।
दशकंधर की सैन नसाई ॥



त्रेतायुग में आप भगवान श्रीराम की सहायता के लिए प्रकट हुई। आपने ही रावण की सेना का नाश किया।

खेला रण का खेल निराला।
भरा मांस-मज्जा से प्याला॥



आपने शत्रुओं का नाश करने के लिए युद्ध रचा और दुष्टों के मांस-मज्जा से आपने अपने खप्पर को भर लिया।

रोद्र रूप लखि दानव भागे।
कियौ गवन भवन निज त्यागे।।



आपका प्रचण्ड-विकराल और रौद्र रूप देख असुर भयभीत होकर अपने भवन छोड़ कर भाग निकले।

तब ऐसौ तामस चढ़ आयो।
स्वजन विजन को भेद भुलायो ॥



जब-जब पाप का अंधकार बढ़ता है, तब-तब आप अपने-पराए का भेद मिटा कर साक्षात् प्रकट होती हैं।

ये बालक लखि शंकर आए।
राह रोक चरनन में धाए।।



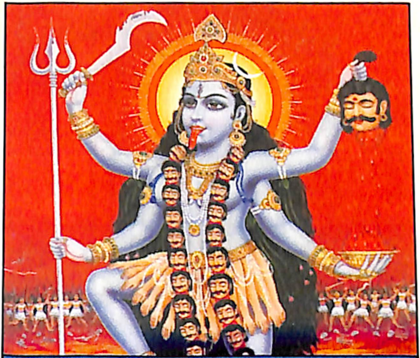
आपके प्रचण्ड रूप से आकर्षित हो [illegible]गवान शंकर भी बालक बन आपके च[illegible]क हो गए।

तब मुख जीभ निकर जो आई।
यही रूप प्रचलित है माई॥



शंकरजी को चरणों में देख आश्चर्य से आपकी जिह्वा बाहर निकल आई और यही रूप प्रचलित हो गया।

बाढ़्यो महिषासुर मद भारी।
पीड़ित किए सकल नर-नारी ॥



या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता:,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

जब महिषासुर का अहंकार और आतंक बढ़ा तो समस्त नर-नारी त्राहि माम्-त्राहि माम् करने लगे।

करुण पुकार सुनी भक्तन की।
पीर मिटावन हित जन-जन की ॥



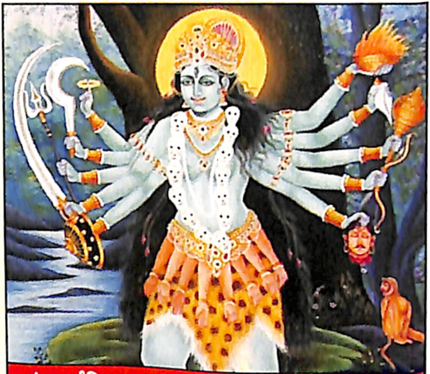
जब आपने अपने भक्तों की करुण पुकार सुनी तो पीड़ित मानवता के उद्धार के लिए उद्यत हो उठीं।

तब प्रगटी निज सैन समेता।
नाम पड़ा मां महिष विजेता ।।



हे माता! आप अपनी सेना सहित प्रकट हुई और महिषासुर का संहार कर महिष-विजेता कहलाईं।

शुंभ निशुंभ हने छन माहीं।
तुम सम जग दूसर कोउ नाहीं ।।



ॐ सर्वविद्या स्वरूपा हि कुमारी नात्र संशयः।
एका हि पूजिता बाला सर्वं हि पूजितं भवेत्।।

अत्याचारी शुंभ-निशुंभ दैत्यों को आपने पलक झपकते ही समाप्त कर दिया। आप संसार में अद्वितीय हैं।

मान मथनहारी खल दल के।
सदा सहायक भक्त विकल के।।



हे मां! आप जहां शत्रुओं के अहंकार को तोड़ने वाली हैं, वहीं कष्टों से घिरे भक्तजनों की सहायिका भी हैं।

दीन विहीन करैं नित सेवा।
पावैं मनवांछित फल मेवा ।।



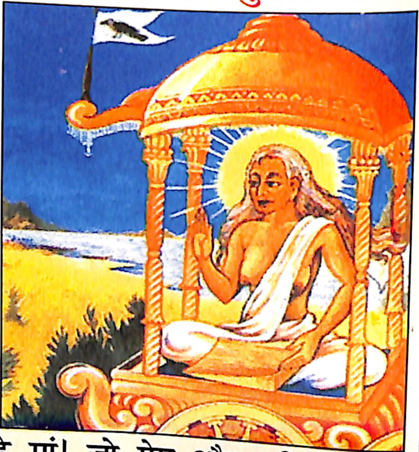
जो दीन-दुःखी नित आपकी सेवा में लीन रहते हैं, वे निश्चित ही आपकी दया और वरदान के पात्र बनते हैं।

संकट में जो सुमिरन करहीं।
उनके कष्ट मातु तुम हरहीं॥



हे माता! जो संकटकाल में आपका स्मरण भक्तिभाव से करता है, आप निश्चित ही उसका कष्ट हरती हैं।

प्रेम सहित जो कीरति गावैं।
भव बन्धन सों मुक्ती पावैं॥



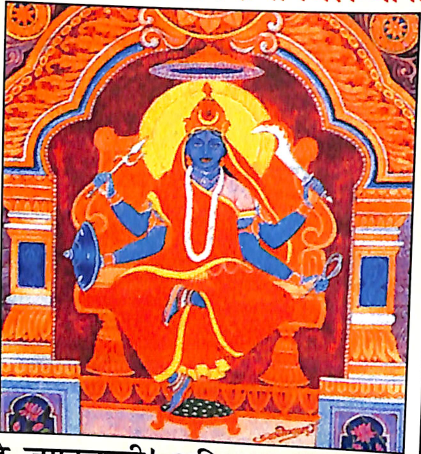
हे मां! जो प्रेम और भक्तिभाव से आपका यशोगान करता है, आप उसे भव-बंधन से मुक्ति प्रदान करती हैं।

काली चालीसा जो पढ़हीं।
स्वर्गलोक बिनु बंधन चढ़हीं ॥



जो भी नियमपूर्वक भक्ति-भाव से काली चालिसा का पाठ करता है, उसकी सद्‌गति अवश्य होती है।

दया दृष्टि हेरौ जगदम्बा।
केहि कारण मां कियौ विलम्बा॥



हे जगतजननी! अविलम्ब कृपा दृष्टि डालकर मेरा उद्धार करें। किस कारण से आप इतना विलम्ब कर रहीं हैं?

करहु मातु भक्तन रखवाली।
जयति जयति काली कंकाली ॥



सदैव भक्तों के साथ रहने वाली, भक्तरक्षक हे माता! हम अन्तर्हृदय से आपकी जय-जयकार करते हैं।

सेवक दीन अनाथ अनारी।
भक्तिभाव युति शरण तुम्हारी॥



यह मुर्ख और दीन-हीन सेवक भक्तिभाव से आपकी शरण में है। हे माता! इसकी त्रुटियों को क्षमा करना।

॥ दोहा ॥

प्रेम सहित जो करे, काली चालीसा पाठ।
तिनकी पूरन कामना, होय सकल जग ठाठ॥



जो व्यक्ति प्रेम और भक्तिभाव से काली चालीसा का पाठ करता है, उसकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

संकटमोचन काली अष्टक

चिन्तित देख इन्द्र की माता,
जगदम्बे न तथ्य विचारो।
क्रोधित खप्पर खड्ग सम्भारो॥
भ्रू से प्रकट भई श्री काली,
कूद पड़ी निर्भय रण में वे।
चंड मुण्ड के त्रिशूल मारो॥
को नहिं जानत है जग में,
मां संकटमोचन नाम तिहारो॥
बड़ी वीरता से मां तुमने,
रण में चण्ड व मुण्ड पछारो॥
शुम्भ निशुम्भ बड़े अभिमानी,
तिनके शूल वक्ष में मारो॥
रक्तबीज का काटि लियो सिर,
वरदानी कर गयो किनारो।
को नहीं जानत है जग में,



मां संकटमोचन नाम तिहारो॥
भूमि शत्रु के रक्त रंग गई,
जब खप्पर व खड्ग निकारो।
महिषासुर काटे गयो युद्ध में,
बड़ा घमण्डी शत्रु विचारो॥
कौन सो संकट मोहि गरीब को,
जो तुम पै मां जात न टारो॥
को नहीं जानत है जग में,
मां संकटमोचन नाम तिहारो॥
देवन के दुख दूर हो गए,
तब झट पट बाग स्वर्ग को झारो।
बरसे इतने फूल कि माता,
छिपीं क्रोध कर गयो किनारो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश मगन भए,
छुए चरण यमराज विचारो।
को नहिं जानत है जग में,
मां संकटमोचन नाम तिहारो॥

माता महाकाली पूजन आरम्भ खण्ड

नित्य पूजन विधि

(हिन्दी भाषी उपासकों के लिए)

उपासको! निष्काम भाव से नित्य ही माता काली की उपासना करने वाले उपासक को चाहिए कि वे ब्रह्म मुहूर्त्त में निद्रा को त्यागे। शौचादि से निवृत्त हो स्नान करके पवित्र हो जाएं, फिर पूरब की तरफ मुख करके माता काली की प्रतिमा या तस्वीर के सामने समस्त पूजन सामग्री एकत्रित कर लें। लाल या काले कम्बल के आसन पर बैठ जावें। धूप-दीप जगावें। माता काली की प्रतिमा आम लकड़ी से बने सिंहासन पर काले रंग का वस्त्र बिछाकर स्थापित करें। स्वयं भी काला वस्त्र धारण करें। काले रंग की तौलिया या रूमाल सिर पे अवश्य रखें, इसके पश्चात् ही पूजन आरम्भ करें।

नित्य पूजन सामग्री

माता काली की प्रतिमा या तस्वीर, आम लकड़ी से बना सिंहासन, सिंहासन पर बिछाने हेतु काले वस्त्र, उपासक के पहनने हेतु काले वस्त्र, दीपक, रूई, देसी घी, धूप या अगरबत्ती, गंगा जल, अक्षत (चावल), पान, सूपारी, लाल चन्दन, नैवेद्य (लडडू), बिल्वपत्र, पुष्प, यज्ञोपवीत, पुष्प की माला, कपूर, माचिस इत्यादि।

पूजन आरम्भ

सर्वप्रथम दाहिने हाथ की अंजुली में गंगा जल लेकर नीचे लिखित मंत्र को पढ़े। मंत्र समाप्त होते ही अंजुली का जल शरीर पे छिड़क लें।

पवित्र होने का मंत्र

हे अंजुली जल हो गंगा जल, तन मन करो पवित्र।
हो जाए मेरे देव, नाग, गन्धर्व, व मानव मित्र॥
मेरी विनती हे गंगा माँ, चरण करे स्वीकार।
तन मन हृदय पवित्र करें, माँग रहा हूँ प्यार॥

मन दे ऐसी भावना, हे गंगा के नीर।
रोम-रोम हो कालीमय, कंचन होवे शरीर।।

मंत्रोच्चारण समाप्त होते ही अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें तत्पश्चात हाथ जोड़ कर गणनायक श्री गणेश की वन्दना करें। क्योंकि किसी भी पूजन के आरम्भ में सर्वप्रथम श्री गणेश पूजन न करें तो उपासना सफल नहीं होती। अतः आत्म शुद्धि के बाद गणेश जी की स्तुति करें-

श्री गणेश आराधना मंत्र

कृपा करें गणनायाक जी, शुभता कर दें साथ।
ऋद्धि-सिद्धि शुभ-लाभ जी, सब हैं तेरो हाथ।।
सर्वसिद्धि मेरे साथ करें, हे गणपति भगवान।
पूर्ण करें प्रभु कामना, बारम्बार प्रणाम्।।

इसके बाद दाहिनी हथेली पर जल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, दूर्वा, नैवेद्य (लड्डू) लेकर नीचे लिखित मंत्र का-

उच्चारण करें, मंत्र समाप्त होते ही हाथ की वस्तुएं माता काली सिंहासन पर समर्पित कर दें।

श्री गणेश सामग्री समर्पण मंत्र

जल अक्षत चन्दन पुष्प से, गणपति तुझे रिझाता हूँ।
नैवेद्य दुर्वादल सिन्दुर से, अपनी विनय सुनाता हूँ॥
कैसे पूजन मैं करूं? न पूजन का सामान।
हृदय समर्पित करता हूँ, हे गणपित भगवान॥

अब पुनः गंगा जल अंजुली में लेकर नीचे लिखित मंत्र पढ़े तथा मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुली जल माता काली जी के सिंहासन पर छिड़क दें।

महाकाली आसन शुद्धि मंत्र

अंजुली जल त्रिवेणी जल बन, आसन करो पवित्र।
होंगे विराजित माता काली, संग में सारे इष्ट॥
आसन करूं पवित्र हे अम्बे, होवें विराजमान।
पास मेरी इक भावना, पूजन का सामान॥

दीन-हीन पर दया करो, कृपालु काली मात्।
सर्वसुखों का साधन दो, रहे न विपदा साथ॥

इसके पश्चात् करबद्ध होकर प्रार्थना करें-

प्रार्थना मंत्र

पूजा की विधि मैं न जानूं, हे काली करतार।
एकमात्र मैं माँ-माँ करके, तुझको रहा पुकार॥
आद्या काली अम्बिके, है बारंबार प्रणाम।
इस निर्धन की कुटिया में, ले अपना स्थान॥
खप्पड़ वाली अम्बिके, दे दो मैया प्यार।
भक्ति का वरदान दो, स्तुति बारं-बार॥
पाप हमारी क्षमा करो, मैं बालक अज्ञान।
दया करो जगदम्बिके, शिव-शव-शक्ति महान॥

इसके पश्चात् गंगा जल से माता काली जी को स्नान करावें। इस क्रम में अंजुली में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़े, फिर मंत्र समाप्ति के बाद अंजुली का जल माता काली के मस्तक पर समर्पित करें।

माता काली को स्नान कराने का मंत्र

गंगा की ये पावन जल, अमृत रूप समान।
उस जल से हे जगदम्बे, करा रहा स्नान॥
अपना तन वो मन मेरा, मैया करो पवित्र।
भक्ति हमको दान दें, एक तुम्हीं हो इष्ट॥

इसके बाद माता जी के चरणों में अक्षत (चावल) निम्न मंत्र उच्चारण करने के बाद चढ़ावें।

अक्षत समर्पण मंत्र

शक्ति और सामर्थ्य नहीं, तण्डुल अर्पित करता हूँ।
हे काली माँ केवल तुझको, स्नेह समर्पित करता हूँ॥
भोलेनाथ के साथ में, सदा बिराजें द्वार।
निर्बल की सुन याचना, हे शिव के आधार॥
दस विद्या महाकाली माँ, कर मेरा उद्धार।
हृदय कलश पे बैठो अम्बे, विनय करो स्वीकार॥

चन्दन लेपन मंत्र

माता की प्रतिमा के मस्तक पर अब चन्दन लेप करें और निम्न मंत्र को पढ़े-

मेरे हृदय में सदा बिराजें, चन्दन तुझे चढ़ाऊ मैं।
नेह लगाकर तेरे चरणों में, पुलकित हो लिपटाऊं मैं॥
कराइये माँ अधम से, मस्तक चन्दन लेप।
क्यों बालक से रूष्ट हो, नैन खोलकर देख॥
भवसागर में डूब रहा, मैया सुनो पुकार।
जीवन नैया पार करो, बनके खेवन हार॥

अब माता काली के मस्तक पे बिल्वपत्र चढ़ावें-

बिल्वपत्र समर्पण मंत्र

शिव का प्यारा बिल्वपत्र, करो 'शिवा' स्वीकार।
भक्ति भर दे रोम-रोम, मांग रहा हूँ प्यार॥
ग्रह अनिष्ट को नाश करें, हे सृष्टि के करतार।
धन-जन-सुख सम्पत्ति से, भर मैया भंडार॥

अब पुष्प समर्पित करें-

पुष्प समर्पण मंत्र

पुष्पों की पंखुड़ियों से माँ, अपना स्नेह जताता हूँ।
सफल करो सब कामना, नित्य ही विनय सुनाता हूँ॥
मेरा मस्तक शव समझके, अपने चरण विराजो जी।
रौशन कर दो सारे जग में, विद्या बुद्धि पाऊँ जी॥

इसके बाद माता जी की सिन्दूर चढ़ावें।

सिन्दूर समर्पण मंत्र

सिन्दूर से माँ आपका, करता हूँ सम्मान।
भक्ति की शक्ति मिले, मांग रहा वरदान॥
धन-जन दे माँ कामना, हे जग के करता।
मैं बालक अज्ञान हूँ, चमका दे संसार॥

अब नीचे लिखित मंत्र वन्दना करते हुए अम्बिका को पुष्प माला समर्पित करें।

पुष्प माला समर्पण मंत्र

इन पुष्पों की पंखुड़ियों में, छिपा है हृदय पराग मेरा।
श्रद्धा सुमन समर्पित करते, जगादे अम्बे भाग्य मेरा॥
भक्ति ऐसी दो हमें, युग-युग नहीं भुलाऊं मैं।
जब भी देखूं जहां भी देखूं, एक तुम्हीं को पाऊं मैं॥
हर कष्टों को दूर करो, करो हमारा-त्राण।
धन जन से परिपूर्ण करो माँ, बारंबार-प्रणाम॥

अब मातेश्वरी को सुगन्धित धूप दिखावें।

सुगन्धित धूप समर्पण मंत्र

मन को माँ हर्षित करने, धूप करे स्वीकार।
सबको तूने तारी मैया, हमको भी अब तार॥
शक्ति सकल मनोरथ दे, पूरण कर सब काम।
तुझे महाकाली माता बारंबार-प्रणाम॥

अब माता काली को प्रज्जवलित दीप दिखावें।

प्रज्जवलित दीप समर्पण मंत्र

दीपक की लौ से हे माता, भेज रहा संदेश।
विनय करूं हे जगदम्बे पूरा करो उदेश॥
तुम बिनु मेरा जीवन है, कीट पतंग समान।
हर्षित होकर बालक का, पूर्ण करें अरमान॥

अब माता को फल, मिठाई इत्यादि नैवैद्य समर्पित करें।

नैवेद्य समर्पण मंत्र

भक्ष्य पदारथ मधुर भोज्य, कर अम्बे स्वीकार।
और नहीं कुछ पास में, कर मैया उद्धार॥
कृपा करो अनाथ पे, करदो हमें सनाथ।
हृदय विराजो माता जी, सदा रहो तुम साथ॥

अब दोनों हाथों की अंजुली में पुष्प भरकर ठेहुने के बल बैठकर या खड़े होकर नीचे लिखित प्रार्थना समाप्त होने के बाद अंजुली का पुष्प माता जी के चरणों में समर्पित कर दें।

पुष्पांजलि प्रार्थना

विनय करूं हे काली मैया, जीवन मेरा संवार।
मैया तार-तार-तार, हे मैया तार-तार-तार॥१॥
बाधा से कह दो हे माता, सीने न लिपटाए।
कहो निराशा से वो हमसे, प्रिती नहीं बढ़ाए॥
दिल से कहदो दरिद्रता से, करे न हमसे प्यार।
मैया तार-तार-तार, है मैया तार-तार-तार॥२॥
दारूण दुःख ने 'खप्पड़वाली' जियरा मेरा जलाए।
डूबा गम के सागर दिल की, ज्योती बुझती जाए।
चिन्ता ने नित ही लटकाए, गर्दन पे तलवार।
मैया तार-तार-तार, हे मैया तार-तार-तार॥३॥
लक्ष्मी और सरस्वती माता, मेरे घर बस जाएं।
चरणों में ये दास पड़ा है, इतनी दया दिखाएं॥
खड़ग वाली उलझन से कह दो, करे नहीं लाचार।
मैया तार-तार-तार, हे मैया तार-तार-तार॥४॥

तुम बिनु जग में मुण्डमालिनी, और नहीं कोई मेरा।
अन्धकार में जीवन मेरा, मांगू नया सवेरा॥
अपने इस नांदा बालक का, कर अम्बे उद्धार।
मैया तार-तार-तार, हे मैया तार-तार-तार॥५॥

पुष्पांजलि प्रार्थना समाप्त होते ही हाथों का पुष्प माता के सिंहासन पर चढ़ावें। तत्पश्चात् 'सिद्ध काली चालीसा' का पाठ करें। पाठ समाप्त होने के बाद आरती गावें, साथ ही थाल में पान पत्ते पर कपुर की बाती जलाकर मैया को आरती दिखावें। इसके बाद माता को प्रणाम करें। फिर चाय-नाश्ता आदि ग्रहण कर अपने कार्यों में संलग्न हो जावें।

बालार्क मण्डलं भासां, चतुर्वाहा त्रिलोचनाम्।
पाशांकुश शरांश्चापान्, धारयन्तीम् शिवां भजे॥

आरती काली माता जी की

आरती कीजै काली मां की॥
काली मां की आरती कीजै,
स्नेह सुधा सुख सुन्दर लीजै।
जिनके नाम लेत दुःख भाजै,
ऐसी वह माता वसुधा की॥
पापा विनाशिनि कलि मल हारिणि,
दयामयी भवसागर तारिणि।
शस्त्रधारिणी शैल विहारिणि,
बुद्धिराशि निजजन त्राता की॥
निशचर कुल मर्दिनि भगनी,
गौरव गान करें जग प्राणी।
शिव के हृदयासान की रानी,
करें आरती हम सब ताकी॥

मां कालीजी की आरती

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गायें भारती,
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
माता तेरे भक्त जनों पर, भीड़ पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ, करके सिंह सवारी।
सौ सौ सिंहों से बलशाली, दस भुजाओं वाली।
दुखियों के दुःख को निवारती।
ओ मैया.....
मां बेटे का इस जग में है, बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कपूत सुने हैं पर, ना माता सुनी कुमाता।
सब पर करूणा दरसाने वाली अमृत बरसाने वाली।
दुखियों के दुःख को निवारती।
ओ मैया.....



नहीं मांगते धन और दौलत, ना चांदी ना सोना।
हम तो मांगते मां तेरे मन में इक छोटा सा कोना।
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली।
सतियों के सत को संवारती।
ओ मैया.....

॥ महाकाली ध्यान मंत्र ॥

ध्यायेत काली महामाया त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिहवां पूर्ण चन्द्र निभाननाम्॥
नीलोत्पल दल श्यामां शत्रु संध-विदारिणीम्।
निर्भयां रक्तबदनां दष्ट्राली-घोर रूपिणिम्॥
साट्टहासा ननां देवी सर्वदां च दिगम्बरीम्।
शवासन स्थितां काली मुण्डमाला विभूषिताम॥
नर मुण्डं तथा खड़गं कमलं च वर तथा।
इति ध्यात्वा महाकाली ततस्तु कवचं पठेत॥

काली चालीसा

मंदिरों तथा धार्मिक उत्सवों में पुस्तक भेंट करने वाले श्रद्धालु सज्जन प्रकाशक से सीधे सम्पर्क करें, उन्हें पुस्तकें लागत मूल्य पर दी जाएंगी।



MAHAMAYA PUBLICATIONS (0181-2212696)

महामाया
पब्लिकेशन्स